प्रस्तावना

भारत में सोयाबीन की व्यावसायिक खेती 1970 के दशक के प्रारम्भ में शुरु हुई थी। विगत् लगभग 45 वर्षो में देश में सोयाबीन के क्षेत्रफल तथा उत्पादन में निरंतर वृद्धि हुई है तथा सोयाबीन देश में प्रमुख तिलहनी फसल के रुप में स्थापित हो गई है। वर्तमान में सोयाबीन देश में करीब 110 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बोयी जाती है। देश में सोयाबीन के अंर्तगत कुल क्षेत्रफल एवं उत्पादन का आधे से ज्यादा का हिस्सा मध्यप्रदेश में होने से उसको 'सोया–राज्य' कहा जाता है। मध्यप्रदेश के बाद महाराष्ट्र और राजस्थान, क्षेत्रफल व उत्पादन के आधार पर क्रमशः दूसरे एवं तीसरे स्थान पर है। इसके अतिरिक्त हमारे देश के किसानों तथा अनुसंधान एवं विस्तारकर्ताओं के अथक प्रयासों के कारण देश के शेष राज्यों जैसे कि तेलंगाना, कर्नाटक, गुजरात, छत्तीसगढ़ आदि में भी सोयाबीन के क्षेत्रफल में निरंतर वृद्धि हो रही है। सोयाबीन अन्य खरीफ फसलों की तुलना में कम पूंजीगत लागत वाली एवं अधिक लाभदायक फसल है। सोयाबीन इक्कीसवीं सदी की एक चमत्कारिक फसल है। इसमें पाये जाने वाले विविध लाभकारी गुणो के कारण यह भारत की ग्रामीण जनता में व्याप्त प्रोटीन के कुपोषण की समस्या को कम करने का सामर्थ्य रखती है। यह एक तेल–युक्त फसल है, जिसमें प्रोटीन की मात्रा औसतन 40 प्रतिशत तथा तेल की मात्रा लगभग 20 प्रतिशत होती है।

अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों के माध्यम से विकसित उन्नत प्रजातियों एवं उत्पादन तकनीकी को देश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में कम से कम तीन वर्षो के निरंतर परीक्षण एवं आंकलन में लाभकारी पाये जाने पर ही उन्हें राज्य/क्षेत्र अनुसार विमोचित किया जाता है। किसी भी फसल का अधिकाधिक उत्पादन लेने में उन्नत किस्म, उसके गुणवत्तापूर्ण बीज एवं फसल की उन्नत उत्पादन तकनीकी को किसानों द्वारा अधिकाधिक अपनाना महत्वपूर्ण होता है। देश के विभिन्न सोयाबीन उत्पादक राज्यों में कुछ प्रगतिशील कृषकों ने सोयाबीन की उन्नत उत्पादन तकनीकी का उचित अंगीकरण करके न केवल अधिक उपज प्राप्त की है, बल्कि अन्य किसानों के लिये उदाहरण प्रस्तुत किया है। आशा है कि इन किसानों की तरह अन्य कृषक भी सोयाबीन की उन्नत उत्पादन तकनीकी को अपनाकर अधिक उपज प्राप्त करेगें।

विरेन्द्र सिंह भाटिया
निर्देशक

1 सोयाबीन की खेती में उच्चतम उत्पादन की मिसाल

नाम	:	श्री प्रशांत भानुदास पाटिल
पता	:	राड़ेवाड़ी, अंकलखोप, सांगली, महाराष्ट्र
आयु	:	38 वर्ष
शिक्षा	:	बी.एस.सी.
कुल जमीन	:	1.75 हे.
सोयाबीन के अधीन जमीन	:	0.75 हे.
उगाई जा रही फसलें	:	सोयाबीन, हल्दी, गेहूँ, गन्ना
संपर्क नं.	:	9960196050

सलाहकार संस्थाएँ

अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना – कृषि अनुसन्धान केंद्र, (कसबे दिगराज) महाराष्ट्र

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

कृषि विभाग, महाराष्ट्र

परिचय

भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है । अतः अर्थव्यवस्था को मजबूत करने एवं देश को विकसित बनाने में कृषि में नवाचार एवं विज्ञान का अधिक से अधिक उपयोग जरूरी है । वैज्ञानिक खेती में प्रबंधन का बहुत बड़ा महत्व है, जैसे संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, कीट एवं व्याधी प्रबंधन, सिंचाई एवं खरपतवार प्रबंधन इत्यादि, जोकि एक नवाचार किसान इनको बड़ी आत्मीयता के साथ करता है । किसान हमेशा से ही अपनी जमीन से जुड़ा हुआ है जो खेती की हर भाषा को समझता है तथा इसकी देख–रेख में भी बड़ी अहमियता दिखाता है । एक नवाचार किसान उत्कृष्ट कृषि पद्धतियों एवं नई तकनीकियों को अपनाता है तथा अधिक उत्पादन प्राप्त करता है । ऐसे किसान भाई कृषि से संबंधित अलग–अलग जगह से प्रशिक्षण पाते हैं तथा वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देते हैं और दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत का काम करते हैं तथा इनकी कृषि क्षेत्र में एक विशेष पहचान भी बनती है ।

समस्या

- कीटो और बिमारियों का प्रकोप
- जलवायु परिवर्तन से मौसम में अनिश्चितता

निवारण

श्री प्रशांत भानुदास जी बहुत ही नवाचार किसान है एवं अनुसन्धान की नई नई तकनीकियों को अपनाने में विश्वास रखते है जो की वर्तमान में सफल खेती एवं अधिक उत्पादन लेने के लिए बहुत जरुरी हैं। श्री प्रशांत जी भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान की अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना के माध्यम से जुड़े हुये है जो की महाराष्ट्र के कसबे दिगराज में क्रियावन है। इन्होने इसके माध्यम से सोयाबीन की वैज्ञानिक खेती के बारे में विशेषज्ञों

से ज्ञान प्राप्त कर नविन तकनीकियों एवं समय के साथ प्रबंधन कर अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया। यह हमेशा से सोयाबीन सहित सभी फसलें रिज एवं फरो पद्धति से ही उगाते रहे हैं। मुख्यरूप से अच्छे प्रमाणित बीज का चुनाव कर, उपयुक्त रसायन से उसको उपचारित किया तथा उचित बीज दर के साथ बोवाई की। इसके साथ–साथ इन्होनें पी.एस.बी.–राइजोबियम कल्चर से भी बीज को उपचारित किया । सिंचाई की जरुरत पड़ने पर ड्रिप सिंचाई विधि से फसल को पानी दिया। इन्होने खरपतवार, कीट, व्याधियों एवं पोषक तत्व प्रबंधन के लिए समेकित प्रबंधन को चुना तथा इनसे होने वाले नुकसान से बचाया। इस तरह से ये सोयाबीन की वैज्ञानिक खेती कर, अधिक उत्पादन प्राप्त कर दुसरे किसान भाइयो के लिए एक प्रेरणास्रोत बने। श्री प्रशांत के अनुसार सोयाबीन का अधिक उत्पादन लेने के लिए निम्न पाँच बाते अत्यंत आवश्यक हैं (1) उपयुक्त किस्म का प्रमाणित बीज (2) अनुशंसित फफुन्दनाशक से बीज उपचार (3) चोपने की विधि (4) 37.5 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से बोवनी (5) उपयुक्त पौध संख्या (6) बोवनी के समय अनुशंसित उर्वरको की मात्रा (7) सूखे की स्थिति में टपक सिंचाई पद्धति से नमी प्रबंधन (8) किट एवं रोग प्रबंधन हेतु अनुशंसित रसायनों का उपयोग। इन पद्धतियों का उपयोग कर श्री प्रशांत पाटिल जी ने वर्ष 2011 के दौरान अधिकतम 62 क्विंटल/हेक्टेयर की दर से सोयाबीन का उत्पादन कर महाराष्ट्र राज्य के कई पुरस्कारों को प्राप्त किया एवं कृषको का गौरव बढ़ाया हैं।

सम्मान

- अधिक उत्पादन हेतु महाराष्ट्र शासन का खेती मित्र पुरस्कार, 2011
- सर्वाधिक उत्पादन हेतु साल्वेंट एक्सट्रैक्शन एसोसिएशन ऑफ इंडिया का पुरस्कार
- फसलों के उत्पादन के लिए राजर्षि शाहू कृषि भूषण पुरस्कार
- फसलों के उत्पादन हेतु जिला परिषद् पुणे की और से उत्कृष्ट कृषक पुरस्कार

2 गृहणी, कृषक एवं अन्वषक

नाम	:	श्रीमती चौहान मंजुलाबहन रमेश भाई
पता	:	पहाड लिमखेडा, दाहोद, गुजरात
आयु	:	32 वर्ष
शिक्षा	:	9 वीं कक्षा
कुल जमीन	:	2 हे.
सोयाबीन के अंतर्गत क्षेत्रफल	:	0.20 हे.
उगाई जा रही फसलें	:	सोयाबीन, मक्का, अरहर, गेहूँ
संपर्क नं.	:	9754527810

परिचय

भारत की पावन भूमि पर कई महान महिलाओं ने जन्म लिया, एवं अपने अद्वितीय कार्यो से समाज एवं आने वाली पीढियों के लिए कई उदाहरण प्रस्तुत किये है। भारतवर्ष के इतिहास में विकास के सभी क्षेत्रो में महिलाओं का योगदान हमेशा रहा है और आज भी हैं । इनकी भागीदारी हर क्षेत्र में रही है। चाहे वह कृषि का क्षेत्र हो, या आर्थिक और सामाजिक उत्थान में हो, देश की अर्थ–व्यवस्था को सुदृढ़ करने में इनका विशेष योगदान सदैव रहा है। प्राचीनकाल से लेकर 1970 के दशक तक महिलाओ द्वारा किये गए असामान्य कार्यो को इतनी स्वीकार्यता एवं मान्यता नहीं मिली थी, विगत तीन दशकों से महिलाओं के योगदान को मान्यता प्रदान करते हुए इनके अनेक कार्यों को देश के विकास कार्यक्रमों में सम्मिलित किए जाने लगी हैं। इसी तारतम्य में गुजरात की श्रीमती मंजुलाबहन इन कार्यक्रमों की लाभार्थी हैं तथा अन्य महिलाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं।

सलाहकार संस्थाएँ

अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना –ए.ए.यू.देवगढ़, बारिया, गुजरात

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

समस्या

- खरीफ में बारिश पर निर्भर कोई अन्य फसल का विकल्प न होना।

निवारण

पहाड गाँव की निवासी श्रीमती मंजुलाबहन हमेशा से ही अपने खेत में नए–नए प्रयोग करने की इच्छुक रही हैं। वह अपने खेत में अधिकतर मक्का की ही फसल लगाती थी। भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर द्वारा क्रियान्वित अखिल भारतीय सोयाबीन अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत आनंद कृषि विश्वविद्यालय, के देवगढ़, बारिया, गुजरात स्थित केंद्र के वैज्ञानिकों ने जब श्रीमती मंजुलाबहन को अपने खेत में

सोयाबीन फसल की खेती प्रारंभ करने का सुझाव दिया, तो वह बड़ी उत्सुक हुई। इन्होंने तुरंत निर्णय लिया की वह अपने खेत के थोड़े से हिस्से में सोयाबीन की फसल जरूर लगाएंगी।

सलाह के अनुसार इन्होंने अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत प्राप्त उन्नत किस्म के बीज को बोवनी से पहले उपचारित कर उपयोग किया। इन्होंने यह भी समझा की उर्वरको का अधिक प्रयोग न केवल मिट्टी के लिए नुकसानदायक है, बल्की फसल उत्पादन की लागत भी बढ़ाते हैं, जबकि उत्पादन में एक सीमा के बाद कोई लाभ नहीं होता है। इस बात को अच्छी तरह समझकर वह आवश्यकता अनुसार उर्वरकों का सही इस्तेमाल करती हैं। इनका विश्वास है की जैविक उर्वरक का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करना चाहिए। सोयाबीन फसल लगाने के प्रथम वर्ष (2015) में ही इन्होंने गुजरात राज्य की औसत उत्पादकता 7–8 किं/हे., की तुलना में 15 किं/हे., उत्पादन पाकर अन्य सोयाबीन कृषको के लिए एक उदहारण प्रस्तुत किया। अपनी सफलता से प्रोत्साहित होकर इन्होंने पिछले दो वर्षों में लगातार सोयाबीन की खेती करना शुरू की हैं। इनकी सफलता से प्रेरित अन्य कृषक भी इस क्षेत्र में सोयाबीन की खेती कर लाभ पा रहे हैं।

जैसा की नागरिक अधिकारों की पहली महिला रोसा पार्क ने कहा, "प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के लिए एक आदर्श के रूप में अपना जीवन जीना चाहिए", श्रीमती मंजुलाबहन, इस कथन की जीती–जागती मिसाल हैं।

3 कृषक जिसका है नई पद्धतियों में विश्वास

नाम	: श्री सरदार सिंह
पता	: भडका, आगर मालवा (म.प्र.)
आयु	: 47 वर्ष
शिक्षा	: पाँचवीं
कुल जमीन	: 2.0 हे.
सोयाबीन के अधीन जमीन	: 2.0 हे.
उगाई जा रही फसलें	: सोयाबीन, मक्का, गेहूँ, अरहर,
संपर्क नं.	: 8462078101

परिचय

भारत में लगभग 67 प्रतिशत कृषक लघु एवं सीमांत हैं जिनके पास केवल 1–2 हेक्टेयर भूमि है। ऐसी स्थिति में उत्कृष्ट कृषि पद्धतियों (गुड एग्रीकल्चरल प्रैक्टिसेज) एवं नई कृषि तकनीकियों के प्रचार–प्रसार हेतु लघु तथा सीमांत कृषकों के बीच तकनिकी के प्रदर्शन कार्यक्रम अति आवश्यक है ।

सलाहकार संस्थाएँ

सोलिडारिडेड क्षेत्रीय विशेषज्ञता केंद्र, भोपाल

भ.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

समस्या

- कीटो और बिमारियों का बढ़ता प्रकोप एवं अधिक उत्पादन लागत
- भूमि की उर्वरता में कमी
- जलवायु परिवर्तन से उत्पादन में कमी

निवारण

श्री सरदार सिंह, किसान उत्पादक कंपनी (फारमर प्रोडूसर कंपनी) "अवंतिका आत्म निर्भर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड" से जुड़े हुए हैं, जो की सोलिडारिडेड नामक संस्था के द्वारा समर्थित है। इस संस्था से सम्बद्ध कृषको को सोयाबीन की उन्नत तकनिकी की जानकारी देने के लिए सोलिडारिडेड ने भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर का "नॉलेज पार्टनर" के रूप में चयन किया। फलस्वरूप, कृषको को प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से सोयाबीन की उन्नत उत्पादन तकनिकी की जानकारी प्रदान की गयी थी जैसे – बीज उपचार, बीबीएफ मशीन से बुवाई, समेकित कीट प्रबंधन (पीला चिपचिपा कीट जाल, फेरोमोन जाल, जैव कीटनाशक) संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, सोयाबीन में अंतरवर्ती फसले तथा उन्नत एवं नयी किस्म (जेएस 20–34) का चयन।

श्री सरदार सिंह जी ने कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के पश्चात ही इन अच्छी एवं उत्कृष्ट कृषि पद्धतियों को अपने खेत के 0.4 हेक्टेयर पर इन सबको अपनाया।

श्री सरदार सिंह जी ने अपने सोयाबीन के खेत में डीएपी, एमओपी और जस्ता सल्फेट की अनुशंसित दर का प्रयोग किया। विशेष बात यह रही की इन्होंने अपने खेत में किसी भी तरह के रासायनिक कीटनाशको का प्रयोग नहीं किया तथा प्रदर्शन प्लाट में कीट नियंत्रण के लिए जैव कीटनाशको जैसे– नीम तेल, फेरोमोन जाल और पीला चिपचिपा कीट जाल (समेकित पद्धतियां) को अपनाया। साथ–साथ इन्होंने सोयाबीन की फसल मक्के के साथ अंतरवर्तीय फसल के रूप में लगाई। इनके अनुसार समेकित कीट नियंत्रण विधियों को अपनाकर रासायनिक कीटनाशको के छिड़काव पर आने वाला खर्च कम हुआ है तथा लगभग रुपये 1750/– हे. की बचत भी पाई। इस वर्ष की फसल के दौरान अनियमित और असमान बारिश के बावजूद, उत्कृष्ट कृषि पद्धतियों अपनाकर इन्होंने सोयाबीन की जेएस 95–60 किस्म की औसत 11.87 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन की तुलना में जेएस 20–34 उगाकर प्रति हेक्टेयर 32.00 क्विंटल उत्पादन पाया, साथ ही अंतरवर्तीय फसल के रूप में मक्का की फसल से भी प्रति हेक्टेयर 4.40 क्विंटल अतिरिक्त उत्पादन पाया।

इन्होंने बताया कि शुरू में इनके कृषक साथियों ने बीबीएफ पद्धति से बुवाई पर लाभ होने पर संदेह व्यक्त किया था, लेकिन फसल देखने के बाद अन्य किसानो ने भी इन सभी पद्धतियों को अपनाने में रुची दिखाई।

सम्मान

अवंतिका आत्म निर्भर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड जैविकी खेती के लिए ।

4 हाथ जो पालना झुलाते हैं वह हल भी चला सकते है

नाम	:	श्रीमती चौहान लताबहन नरेन्द्र सिंह
पता	:	पनाचारिया, लीम खडी, दाहोद, गुजरात
आयु	:	31 वर्ष
शिक्षा	:	बी.ए., बी.एड
कुल जमीन	:	1.25 हे.
सोयाबीन के अंतर्गत क्षेत्रफल	:	0.3 हे.
उगाई जा रही फसलें	:	सोयाबीन, मक्का, अरहर, आलू, प्याज, गेहूँ
संपर्क नं.	:	9754527810

भूमिका

महिलाओं का योगदान प्रचानीकाल से ही कृषि में रहा है और आज भी घर सँभालने के साथ–साथ खेती से जुड़े अधिकतर कार्य महिला ही करती हैं । वह जैसे शिशु को पालने में पूरी मेहनत करती हैं उसी तरह खेती में भी वह अपना पूरा श्रम व योगदान देती हैं। ऐसा ही एक उदाहरण गुजरात के पनचारिया ग्राम की रहने वाली लताबहन का हैं। इन्होने सोयाबीन की खेती करके अपने क्षेत्र में फसल का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाकर एक नई मिसाल पेश की है, जो कि पूरे देश की कृषक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है ।

सलाहकार संस्थाएँ

अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना –ए.ए.यू.देवगढ़, बारिया, गुजरात

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

समस्या

- कीटों की समस्या मुख्यतः गर्डल बीटल
- आधुनिक कृषि यन्त्रध्मशीनरी की अनुपलब्धता
- मौसम से संबंधित समस्याएँ जैसे सूखा पड़ना, बारिश की अनिश्चिता इत्यादि

निवारण

श्रीमती लताबहन भा.कृ.अनु.प.– भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा क्रियान्वित अखिल भारतीय सोयाबीन अनुसंधान परियोजना के केंद्र देवगढ़, बारिया के साथ जुड़ी हुए है । इन्होंने गुजरात के दाहोद जिले में अपनी खेती से सोयाबीन का वर्ष 2017 के दौरान अधिकतम् लगभग् 16 किं.ध्हे. उत्पादन पाकर एक मिसाल अन्य कृषकों के लिए प्रस्तुत की। यहाँ विशेष ध्यान देने वाली बात यह है कि जिस गुजरात राज्य की औसत उत्पादकता 7–8 किं.ध्हे. से भी कम है उस क्षेत्र में लताबहन ने सोयाबीन

का इतना अधिक उत्पादन प्राप्त किया है। इनकी सफलता का प्रमुख कारण आधुनिक एवं नवीनतम् तकनीकियों को अपनाना है। वह अपनी खेती में वैज्ञानिकों द्वारा अनुशंसित तथा जिले के जलवायु के लिए उपयुक्त नई किस्मों का प्रयोग करती हैं। इसके साथ–साथ इन्होंने सोयाबीन के साथ मक्का की अंतर्वती फसल की अनुशंसित तकनिकी अपनाकर प्रति हेक्टेयर क्षेत्र से सकल उत्पादकता व अपनी सकल आमदनी भी बढ़ाई हैं। श्रीमती लता बहन अपने खेत की मिट्टी की गुणवत्ता बनाने रखने के लिए संतुलित मात्र में रासायनिक खाद का प्रयोग करने में विश्वास करती हैं और अन्य कृषक जो कि असंतुलित रूप में रासायनिक खाद का प्रयोग करते है के लिए एक उदाहरण हैं। इन्होंने अपनी सोयाबीन की फसल में हानी करने वाले कीट एवं रोग प्रबंधन के लिए अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसन्धान परियोजना के द्वारा अनुशंसित समेकित फसल प्रबंधन को अपना कर लगातार अपनी फसल की उत्पादकता बढ़ाई हैं । अन्य कृषको के लिए यह सलाह देती हैं की इनके दाहोद जिले में औसत वर्षा से भी कम बारिश होती हैं लेकिन उचित समय पर यदि बोवाई व अच्छा प्रबंधन किया जाये तो सूखे की स्थिति में भी सोयाबीन से अधिकतम् लाभ प्राप्त किया जा सकता है ।

श्रीमती लताबहन के अनुसार सोयाबीन की खेती करना अन्य खरीफ की फसलो की तुलना में आर्थिक रूप से अधिक लाभकारी है।

5 एक प्रगतिशील कृषक – रामावतार मीना

नाम	:	श्री रामावतार मीना
पता	:	बालापुर, लाडपुरा, कोटा, राजस्थान
आयु	:	50 वर्ष
शिक्षा	:	–
कुल जमीन	:	5.60 हे.
सोयाबीन के अंतर्गत क्षेत्रफल	:	6 हे.
उगाई जा रही फसलें	:	सोयाबीन, मक्का, उड़द, सरसों, गेहूँ
संपर्क नं.	:	9928045791

परिचय

हर किसान का अपनी भूमि के साथ एक गहरा रिश्ता होता है। वह अपनी पूरी जिन्दगी उसकी देख– रेख में व्यतीत करता है। खुशी या गम, लाभ या नुक्सान, कुछ भी हो उसका प्यार भूमि के प्रति हमेशा बना रहता है। यह किस्सा है एक सफल कृषक का जो परिश्रम एवं लगन के साथ सोयाबीन की खेती करते हैं।

सलाहकार संस्थाएँ

अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना – कृषि अनुसन्धान केंद्र, (उम्मेदगंज) कोटा

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

समस्या

- कीटो और बिमारियों का प्रकोप एवं अधिक उत्पादन लागत
- भूमि की उर्वरता में कमी
- जलवायु परिवर्तन से उत्पादन में कमी
- मंडी में भाव का आभाव

निवारण

तहसील लाडपुरा के श्री रामावतार मीना, खेती से सम्बंधित नई तकनीकियों के बारे में जानकारी लेने की लिए हमेशा से ही कृषि अनुसन्धान केंद्र कोटा के साथ जुड़े हुए हैं, जो की भा.कृ.अनु. प–भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा क्रियान्वित अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना का केंद्र हैं। ये हमेशा ही अपनी सोयाबीन की बोवनी से पहले वैज्ञानिक खेती की जानकारी कृषि अनुसन्धान केंद्र कोटा के वैज्ञानिकों से लेते है, तथा उनके साथ विचार विमर्श एवं सलाह के पश्चात ही अपना निर्णय लेते हैं।

इस वर्ष भी श्री रामावतार जी ने वैज्ञानिकों से प्राप्त नयी तकनिकी जानकारी के आधार पर सबसे पहले अपने खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई की। यह मानते हैं की इससे कीटों, बीमारियों एवं खरपतवारों के बीज या अवशेष नष्ट हो जाते है जिससे उनका प्रकोप आगामी फसल में कम होता है। तत्पश्चात इन्होंने सोयाबीन के प्रमाणित बीज का चयन किया तथा उसका उचित फफुन्द्नाशको के साथ उपचार कर सही समय पर

अनुशंसित बीज दर के साथ सोयाबीन की बोवनी की। इसके अलावा इन्होंने सोयाबीन की बोवनी के समय कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. रखी। इस वर्ष इन्होंने विशेष रूप से मृदा में उपयुक्त नमी बनाये रखने के लिए पलवार (मल्च) का उपयोग किया। साथ ही इन्होंने सोयाबीन की अनुशंसित उत्पादन तकनिकी में सम्लित सभी पद्धतियों को अपने खेत पर अपनाया जैसे की संतुलित पोषक तत्व का उपयोग, समय–समय पे निराई गुडाई एवं खरपतवार प्रबंधन हेतु उपयुक्त खरपतवारनाशक का उपयोग। इस प्रकार इन्होंने फसल को प्रारंभिक 45 दिनों तक खरपतवार मुक्त रखा। साथ ही ये अपने खेत में रोज जाकर फसल की निगरानी करते रहे। इस प्रकार कीटों एवं बीमारियों के आक्रमण होने पर इन्होने उपयुक्त अनुशंसित कीटनाशक का खडी फसल में छिडकाव करके होने वाले नुकसान को कम करते हैं। इनकी इस सफलता का कारण वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन, तकनिकी जानकारी एवं जागरूकता, परिश्रम के साथ–साथ तकनिकी को अपनाना है, जिससे इन्होंने 20 किं./हे. सोयाबीन का उत्पादन प्राप्त किया।

6 कृषक का विज्ञान में विश्वास

नाम	: श्री राजेन्द्र
पता	: भगवानपूरा, लाडपुरा, कोटा राजस्थान
आयु	: 45 वर्ष
शिक्षा	: बारहवीं
कुल जमीन	: 4.0 हे.
सोयाबीन के अधीन जमीन	: 3.2 हे.
उगाई जा रही फसलें	: सोयाबीन, मक्का, गेहू, सरसों, लहसून
संपर्क नं.	: 8003838737

परिचय

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का बहुत बड़ा महत्व है। आज भी लगभग 60 प्रतिशत आबादी गावों में निवास करती है जो की पूर्णरूप से कृषि पर आत्मनिर्भर है। समय–समय पर अनुसंधानों से नई–नई उत्कृष्ट कृषि पद्धतियो एवं तकनीकियों का विकास हुआ, जिससे एक क्षेत्र से दुसरे क्षेत्र में नई फसलों तथा तकनीकियों का आवागमन हुआ है।

सलाहकार संस्थान

अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना – कृषि अनुसन्धान केंद्र, (उम्मेदगंज) कोटा

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

समस्या

- कीटों और बिमारियों की बढती तादात एवं अधिक उत्पादन लागत
- भूमि की उर्वरता में कमी
- जलवायु परिवर्तन से उत्पादन में कमी
- मंडी में भाव का आभाव

निवारण

सोयाबीन मध्य प्रदेश में खरीफ में बोई जाने वाली प्रमुख फसल है, भा.कृ.अनु.प.– भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर की अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत राजस्थान के कोटा स्थित कृषि अनुसन्धान केंद्र, (उम्मेदगंज) है, जिसके तहत राजस्थान के किसानों में भी इस फसल के बारे में प्रचार–प्रसार हुआ। श्री राजेन्द्र जी ने कोटा स्थित कृषि अनुसन्धान केंद्र का पूरा–पूरा लाभ उठाया। इन्हें सोयाबीन से सम्बंधित पूर्ण जानकारी केंद्र से प्राप्त होती रही, एवं वहा के वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार इन्होंने उचित किस्म एवं उपयुक्त बीज का चयन कर उसे अनुशंसित फफुन्द्नाशाकों के साथ उपचारित किया। समय पे बोवनी, उचित बीज दर, उचित मात्रा में खाद एवं उर्वरको का प्रयोग कर इन्होने फसल पर आने वाली लागत को कम किया। श्री राजेंद्र जी ने अनुसन्धान केंद्र की अनुशंसा के अनुसार सोयाबीन फसल की

बोवनी से पहले गर्मी के मौसम में खेत की गहरी जुताई कर, कीटों एवं बिमारियों के प्रकोप को कम करने में सफलता पायी। एक अच्छे एवं प्रगतिशील किसान होने के नाते वे सदैव ही अपने खेत का निरीक्षण करते हैं, ताकि वह किसी भी रोग या बीमारी को फैलने से बचा सकें और समय पर उचित उपचार कर सकें। इसके साथ–साथ उचित समय पर बोवाई करने पर कीट और बीमारियों का प्रकोप भी कम होता है और अधिक उत्पादन मिलता है। इस तरह से उत्कृष्ट खेती अपनाकर इन्होंने उपने क्षेत्र में 22 किं./हे. उत्पादन प्राप्त कर दुसरे किसानों के लिए एक मिसाल पेश की है।

7 आत्मनिर्भर किसान या मार्गदर्शक

नाम	: श्री देवराज पाटीदार
पता	: उमरीखेडा, इंदौर (म.प्र.)
आयु	: 63 वर्ष
शिक्षा	: एम.ए., एल.एल.बी.
कुल जमीन	: 4.25 हे.
सोयाबीन के अंतर्गत क्षेत्रफल	: 1.25 हे.
उगाई जा रही फसलें	: सोयाबीन, मक्का, अरहर, आलू, प्याज, गेहूँ
संपर्क नं.	: 9826661160

परिचय

विवधिकरण कृषि अर्थव्यवस्था के लिए अति महत्वपूर्ण है। आज के बदलते परिवेश में वही किसान सफल है, जो समय की आवश्यकता को समझते हुए कृषि तकनीको में परिवर्तन लाय। उमरीखेडा ग्राम, जिला इंदौर के श्री देवराज पाटीदार का ऐसा ही किस्सा हैं। अपने पिताजी, जो की सोयाबीन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों से सन 1990 से ही जुड़े हुए थे, के पदचिन्हों पर चलते हुए श्री देवराज ने विपरीत स्थिति में भी सोयाबीन की अच्छी पैदावार पायी है ।

सहयोगी संस्थाएँ

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर

कृषि विज्ञानं केन्द्र – कस्तूरबा ग्राम, इंदौर

भ.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) ,ग्वालियर

समस्या

- लगातार उत्पादकता में गिरावट
- वर्ष–दर–वर्ष सोयाबीन में कीट व बिमारियों में वृद्धि
- बाजार में उपयुक्त भाव ना मिलना

निवारण

अस्सी–नब्बे के दशक में सोयाबीन की 36–40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज लेने वाले श्री देवराज ने पैदावार को गिरते देखा, तो वह धीरे–धीरे यह समझ गए की यदि इन्होंने उचित कदम नहीं उठाये तो वह शीघ्र ही अपनी आर्थिक स्थिति बदलती हुई पाएंगें। अपने 4.25 हेक्टेयर क्षेत्र में सोयाबीन की फसल लेने के साथ ही, वैज्ञानिकों की राय के अनुसार इन्होंने तय किया कि वह फसल चक्र (सोयाबीन – आलू/लहसुन/प्याज – गेहूं/हरा चारा) तथा अधिक लाभ पाने के लिए सोयाबीन के साथ अंतर्वर्तीय फसलें/अरहर) भी लगायेंगे। पिछले कुछ वर्षो से इन्होंने सोयाबीन के साथ–साथ अन्य फसलें लगा कर अपनी आमदनी में कमी नहीं होने दी। वह शुरू से ही पशु पालन से भी

जुड़े हुए हैं। यह खेत में कटाई पश्चात शेष फसल अवशेष का उपयोग पलवार (मल्च) व पशुओं के चारे के रूप में कर के ना केवल पर्यावरण को साफ सुथरा रखते हैं बल्कि डेयरी के खर्च को भी कम करने में सफल हैं।

श्री देवराज अप्रैल–मई महीने में ही खेत की गहरी जुताई कर छोड़ देते हैं। नाली एवं कुड पद्दति (रिज एवं फरो) चौड़ी क्यारी–नाली पद्दति (बी. बी.एफ) अपना कर के, वह जलवायु परिवर्तन के विपरीत प्रभाव से अपनी फसल को सुरक्षित रखते हैं। गत पांच वर्षों में, चाहे अत्यधिक बारिश हो, या सूखा, फिर भी इन्होंने उत्पादकता में कमी नहीं होने दी।

कई ग्रामीण मंडलों के सदस्य तथा पदाधिकारी रहने के साथ साथ इन्होंने "अखिल भारतीय बायो–डायनामिक्स" नामक संगठन की भी स्थापना की, जिसके यह उपाध्यक्ष भी हैं। जैविक खेती के अपने अनुभव को यह अन्य साथी किसानों के साथ भी सांझा करते हैं, जो की जलवायु परिवर्तन के चलते एक अनुकूल खेती है। ये स्वयं 1.25 हैक्टर में परिवार की खाद्य पूर्ती के लिए सभी फसलों की जैविक खेती कर आत्मनिर्भरता में विश्वास रखते हैं।

श्री देवराज अपनी प्रगति का श्रेय भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिको को देते हैं और उनका विश्वास है कि "जैसा आप सोचते हो, वैसा आप बन जाते हो"। यह हमेशा खेती में नवाचार को अपनाते हैं और सफलता की और कदम बढ़ाते हैं।

सम्मान

- सर्वोत्तम नस्ल (पशु पालन), उर्जा कृषि विज्ञान मेला, कस्तूरबा ग्राम, 1986
- श्रेष्ठ आलू उत्पादक, मध्य प्रदेश सरकार (आत्मा), 2013

8 मालवा के सफल कृषक – श्री लक्ष्मी नारायण

नाम	:	श्री लक्ष्मी नारायण
पता	:	पोलय जागीर, सोनकच्छ देवास, (म.प्र.)
आयु	:	37 वर्ष
शिक्षा	:	10 वीं
कुल जमीन	:	2.25 हे.
सोयाबीन के अधीन जमीन	:	2.25 हे.
उगाई जा रही फसलें	:	सोयाबीन, मक्का, अरहर, गेहूँ
संपर्क नं.	:	9981926722

परिचय

देश के बहुसंख्यक कृषक अपनी छोटी सी जोत में बहुत ही न्यूनतम संसाधनों के उपयोग तथा विपरीत एवं विषम परिस्थिति में अपनी खेती करते हैं जो की एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। ऐसी स्थिति में प्रभावकारी उत्कृष्ट कृषि पद्धतियों (गुड एग्रीकल्चरल प्रैक्टिसेज) का प्रदर्शन इन सीमांत कृषकों के लिए अत्यंत प्रभावशील माध्यम पाया गया है।

सलाहकार संस्थाएँ

सोलिडारिडेड क्षेत्रीय विशेषज्ञता केंद्र, भोपाल

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

समस्या

- नए–नए कीट व रोग का प्रकोप
- अधिक लागत
- उत्पादन में कमी

निवारण

देवास जिले के पोलय जागीर के लघु किसान ने यह साबित कर दिया है कि कम जोत वाली खेती भी लाभदायक हो सकती है। यहाँ के श्री लक्ष्मी नारायण जी, किसान उत्पादक कंपनी (फार्मर प्रोडूसर कंपनी) "अवंतिका आत्मनिर्भर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड" से जुड़े हुए हैं, जो की सोलिडारिडेड नामक संस्था द्वारा समर्थित है। भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर से अपना ज्ञान वर्धन करनी वाली यह संस्था मालवा के किसानों में वह पद्धतिया जो लम्बे समय तक चल सकें तथा साथ ही पर्यावरण के अनुकूल भी हों, के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयासरत हैं। इससे सोयाबीन कृषको को इन पद्धतियों का महत्व तथा उपयोगिता की अनुभूति हो रही हैं।

श्री लक्ष्मी नारायण जी ने भा.कृ.अनु.प.– भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान से अनुशंहित अच्छी कृषि तकनिकीयो को अपनाकर अपने खेत में डीएपी, एमओपी और जिंक–सल्फेट की संस्तुत मात्रा का प्रयोग किया। बदलते मौसम एवं जलवायु के परिवेश में इन्होंने रेज्ड बेड एंड फरो पद्धति के फायदे को

समझा और अपने अन्य कृषक मित्रों के संदेह के बावजूद इस पद्धति को अपनाया और लाभान्वित हुए। पौधे से पौधे की अनुशंसित दूरी तथा बोवनी पूर्व अंकुरण परिक्षण के आधार पर बीज दर को अपना कर इन्होंने बीज की बर्बादी को भी कम किया। यह उत्कृष्ट कृषि पद्धतियों में तथा पर्यावरण हितैषी जैविक क्रियाओ में विश्वास रखते हैं तथा अपने खेत में कोई भी रासायनिक कीटनाशक अथवा शाकनाशी का प्रयोग ना करते हुए, सोयाबीन का अधिक उत्पादन लेकर इन्होंने एक उदहारण प्रस्तुत किया है। कीट प्रबंधन हेतु इन्होंने जैविक कीटनाशक के अलावा, नीम का तेल, फेरोमोन जाल का उपयोग कर कीटों पर सफलतापूर्वक नियंत्रण पाया। श्री लक्ष्मी नारायण जी ने अपनी सोयाबीन की फसल में आक्रमण करने वाले संभावित कीटों की पहचान कर उनके आक्रमण से बचने के लिए उपयुक्त जैविक नियंत्रण के लिए अपने खेत में

पीला चिपचिपा बोर्ड लगा कर कीट एवं रोग पर आसानी से नियंत्रण पाया।

रेज्ड बेड एंड फरो पद्धति को अपने खेत में अपनाकर अनियमित और असमान वर्षा के बावजूद, लंबे समय तक अपने सोयाबीन के खेत में नमी को बनाए रखने में यह सक्षम हुए। साथ ही इनके खेत में खरपतवारों का प्रकोप भी अपेक्षाकृत कम रहा, यह सब उत्कृष्ट कृषि पद्धतियों को अपनाने से ही संभव हुआ है।

सोयाबीन की बोवनी रेज्ड बेड एंड फरो पद्धति अपनाकर नतीजे को देखते हुए, इन्होंने आने वाले रबी मौसम में इसी पद्धति से चने की फसल बोने की योजना भी बनाई है। इनके गाँव के आसपास के कई अन्य किसानों ने रेज्ड बेड एंड फरो पद्धति सीखने के लिए इनके खेत पर आकर अवलोकन किया है। नयी–नयी तकनिकीयों को सफलतापूर्वक अपनाने से यह अपने आसपास के गांवों के अन्य किसानों के लिए एक आदर्श बन गए है ।

9 सामान्य कृषक से मास्टर ट्रेनर

नाम	:	श्री रविन्द्र कुमार ठाकुर
पता	:	सेमल्या चाऊ, इंदौर (म.प्र.)
आयु	:	62 वर्ष
शिक्षा	:	दसवीं
कुल जमीन	:	3.75 हे.
सोयाबीन के अंतर्गत क्षेत्रफल	:	3.50 हे.
उगाई जा रही फसलें	:	सोयाबीन, मक्का, अरहर, गेहूँ
संपर्क नं.	:	9754527810

परिचय

कृषक इस देश की बुनियाद है । कृषकों के अथक परिश्रम के परिणामस्वरुप ही हमको भोजन एवं अन्य खाध्य सामग्री मिल रही है। सफल कृषक की उपलब्धियों का उल्लेख करना एक गर्व का विषय है। श्री रविन्द्र कुमार ठाकुर की कहानी शब्दों में बयां नहीं की जा सकती।

सलाहकार संस्थाएँ

भा.कृ.अनु.सं.– भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

कृषि विज्ञानं केंद्र– कस्तूरबा ग्राम, इंदौर

समस्या

- जलवायु परिवर्तन से प्रभावित उत्पादकता
- खरपतवार, कीट और रोगों की बढती समस्या
- भूमि की उर्वरता में वर्ष–दर–वर्ष कमी

निवारण

श्री रविन्द्र कुमार ठाकुर भ.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान से सन 1990 से जुड़े हुए हैं तथा इन्होंने संस्थान से सोयाबीन उत्पादन तकनिकी पर प्रशिक्षण भी पाया है। वैज्ञानिक एवं कृषि अधिकारियों से प्रशिक्षण व सलाह लेकर न केवल अपने खेतो पर फसलों का अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त किया है, बल्कि यह आज जैविक खेती में एक "कृषक बन्धु मास्टर ट्रेनर" के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं। कृषक हो या कृषि अधिकारी इन्हें सभी पहचानते हैं।

श्री ठाकुर नई जानकारी प्राप्त कर उसे अपनी खेती में भी उपयोग में लाते हैं। सटीक (प्रिसिशन) खेती कर यह सदेव ही लगात कम करने का प्रयास करते है। गहरी जुताई, मिट्टी परीक्षण, खरपतवार, समय पर कीट एवं रोग नाशक दवाओं का छिडकाव, समय–समय पर निगरानी व देख–रेख, आवश्यकता अनुसार स्प्रिंकलर द्वारा सिचाई कर वह अपनी फसल से विपरीत स्थिति में भी अच्छी उत्पादन पा लेते हैं।

जलवायु परिवर्तन के इस काल में इस संस्थान के वैज्ञानिकों की

इस संस्थान के वैज्ञानिकों की सलाह पर इन्होंने अंतर्वर्तिय फसलें जैसे – ज्वार, मक्का, अरहर इत्यादी की खेती सोयाबीन के साथ करनी शुरू की। इस संस्थान द्वारा विकसित नाली एवं कुड पद्दति (रिज–फरो) चौड़ी क्यारी–नाली पद्दति (बी.बी.एफ) मशीन का प्रयोग कर इन्होंने जहाँ अन्य कृषकों की फसल पूरी तरह से नष्ट हो गई, ऐसे स्थिति में भी कुछ ना कुछ उत्पादन पाया।

श्री रविन्द्र ठाकुर जी ने अपने खेत पर सोयाबीन की 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त की है तथा मौसम के अनुकूल न होने पर भी सोयाबीन की उत्पादकता को ज्यादा गिरने नहीं दिया। इसके लिए श्री रविन्द्र ठाकुर खेत की तैयारी से लेकर कटाई तक फसल की लगातार निगरानी करते हैं।

मई माह में ही बीज की अंकुरण क्षमता की जांच कर लेते हैं तथा समुचित वर्षा होने पर ही सोयाबीन की बुवाई करते हैं। सोयाबीन की बोवनी चौड़ी क्यारी–नाली पद्दति से ही करते हैं, जिससे अपनी फसल को अधिक व कम वर्षा के प्रभाव से बचा पते हैं। बीजोपचार आवश्यक रूप से करके फसल पर भविष्य में आने वाले रोगों का पहले से ही वह बचाव कर लेते हैं। मृदा परिक्षण उपरांत फसल के लिए आवश्यक मात्रा में खाद एवं उर्वरकों का प्रबंधन करते हैं द्य फसल की लगातार निगरानी करते रहते हैं और जब इनको फसल पर कोई कीट या रोग का प्रकोप दिखता है तो शुरुआत में ही सोयाबीन के वैज्ञानिकों की सलाह से उसकी पहचान करके ज्यादा

फैलने से पहले ही समुचित निवारण कर लेते ह। इस प्रकार से वह अपने खेत पर सोयाबीन का लगातार अधिक उत्पादन लेने में सक्षम हैं।

सम्मान

- भा.कृ.अनु.प.–गेहूं अनुसन्धान क्षेत्रीय संस्थान इंदौर द्वारा कृषि विशारद 2002 में
- कृषि विभाग मध्य प्रदेश द्वारा कृषक बन्धु मास्टर ट्रेनर
- आत्मा संस्था इंदौर द्वारा जिले में उत्कृष्ट कृषि उत्पादन एवं जैविक खेती हेतु 2010 में पुरष्कृत
- वाइब्रेंट गुजरात वश्विक कृषि समिट 2013 में मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित

10 प्रवर्तक कृषक द्वारा छिड़काव यंत्र में परिवर्तन

नाम	: श्री बनेसिंह चौहान
पता	: लोहारी, धार, मध्य प्रदेश।
आयु	: 61 वर्ष
शिक्षा	: बी.ए., एल.एल.बी.
कुल जमीन	: 50 हे.
सोयाबीन के अधीन जमीन	: 48 हे.
उगाई जा रही फसलें	: सोयाबीन, मक्का, चना, लहसून, पत्तागोभी, मैथी, गेहूँ
संपर्क नं.	: 9926058546

परिचय

कृषि एक ऐसा व्यवसाय है जिसमे अधिक उत्पादन एवं आमदनी के लिए समय समय पर विविधिकरण एवं बदलाव की बहुत जरुरत है। जो कृषक कृषि व्यवसाय में मन से जुड़े हुये है तथा अपनी खेती में कुछ नया करने की सोचते हैं, वो नयी पद्धतियों को अपनाने में बिल्कुल भी परहेज नहीं करते है तथा खेती से अधिक उत्पादन एवं लाभ पाते ह। ऐसे कृषक विभिन्न संस्थानों के साथ लगातार संपर्क बनाये रखते हैं एवं नई तकनीकियों का प्रयोग कर अधिक उत्पादन लेते है तथा दुसरे कृषको के लिए प्रेरणास्त्रोत बनते है। इस तरह से ये खेती के क्षेत्र में अपनी एक अलग ही पहचान बनाते है। ऐसे ही श्री बनेसिंह एक सफल एवं नवाचार किसान है इन्होंने खेती के क्षेत्र अपनी अलग ही पहचान बनाई है।

सलाहकार संस्थाएँ

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, क्षेत्रीय गेहूं अनुसन्धान केंद्र, इंदौर

कृषि विभाग, जिला इंदौर

समस्या

- कीटो और बिमारियों का प्रकोप
- कीटनाशकों के छिडकाव में असमानता तथा अधिक लागत

निवारण

श्री बनेसिंह ने कृषि का महत्व समझकर वकालत के पेशे को दरकिनार करते हुए अपने पैतृक व्यवसाय खेती में कदम रखा। श्री बनेसिंह के अनुसार पिली सोयाबीन के मध्य प्रदेश में आने से ही मालवा के कृषको की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ हैं। इनके अनुभव से यह भी ज्ञात होता हैं की शुरुवात में सोयाबीन की फसल में किसी भी प्रकार के कीट या बीमारी का प्रकोप नहीं होता था। लेकिन विगत कुछ वर्षो में विभिन्न प्रकार के कीटों के प्रकोप के कारण सोयाबीन का उत्पादन प्रभावित होने लगा है। श्री बनेसिंह अपनी आदत के अनुसार प्रतिदिन सुबह खेत का निरीक्षण करते हुये इस बाबत सोचते रहते थे। इस बारे में सोयाबीन संस्थान के वैज्ञानिको से चर्चा में इन्होंने ये पाया की औसतन सभी हानिकारक कीट प्रायः दोपहर के समय पत्तियों की निचली सतह पर होते है। इस प्रकार इन्होंने फसल की उपरी सतह के

साथ–साथ निचली सतह पर भी छिडकाव करने हेतु अपने ट्रेक्टर चालित छिडकाव यंत्र में उपरी नोजल के साथ–साथ जी. आई. पाइप की सहायता से निचली सतह पर भी नोजल लगवा लिया। इस प्रकार श्री बनेसिंह ने सफलतापूर्वक एक यंत्र का निर्माण किया जिससे सोयाबीन की फसल में विभिन्न कीटो के प्रबंधन हेतु पत्तियों की उपरी और निचली सतह पर कीटनाशकों का छिड़काव किया जा सके। उपयुक्त छिडकाव यंत्र बनाकर इन्होने एक अलग नई मिसाल कायम की। इसी प्रकार से इन्होंने भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन से सोयाबीन की विभिन्न प्रजातियों के बीज उत्पादन का कार्यक्रम लेकर एक सफल बीज उत्पादक के रूप में ख्याति अर्जित की है। मध्य प्रदेश विशेषकर मालवा में सोयाबीन फसल के योगदान के बारे में श्री बनेसिंह चौहान आज भी यह कहते हैं की सोयाबीन ने किसानो को उजला किया हैं ।

सम्मान

- सोयाबीन में अधिक उत्पादन एवं तकनिकी प्रचार–प्रसार में सहयोग के लिए भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर एवं सोफा, इंदौर द्वारा सम्मान
- गेहूँ में विपुल उत्पादन प्रोत करने पर भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, नई दिल्ली की सताब्दी वर्ष पर सम्मान
- भा.कृ.अनु.प.–भा.कृ.अनु.सं. के क्षेत्रीय गेहूं अनुसन्धान केंद्र, इंदौर की हीरक जयंती के अवसर पर मालवा क्षेत्र में ड्यूरम गेहूँ की खेती को बढ़ावा देने में योगदान हेतु सम्मान
- कृषि विश्व संचार नामक पत्रिका द्वारा प्रगतिशील कृषक के रूप में सम्मानित
- कृषक प्रतिनिधि के रूप में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित छटी विश्व सोयाबीन सम्मलेन में प्रतिभागिता

11 समेकित फसल प्रबंधन

नाम	: श्री लक्ष्मण सिंह मंडलोई
पता	: निग्नोटी, इंदौर (म.प्र.)
आयु	: 38 वर्ष
शिक्षा	: 10 वीं
कुल जमीन	: 18 हे.
सोयाबीन के अधीन जमीन	: 15 हे.
उगाई जा रही फसलें	: सोयाबीन, मक्का, अरहर, गेहूँ, लहसुन, प्याज
संपर्क नं.	: 8462078101

परिचय

प्रगतिशील कृषक अन्य कृषको के लिए एक उदहारण प्रस्तुत करते हैं। ये तन, मन एवं धन से समर्पित होकर कृषि में नयी–नयी तकनीकियों का प्रयोग करते हैं एवं इनके प्रचार प्रसार के लिए एक दूत के रूप में अपना योगदान देते हैं। इनमे से कुछ ऐसे जागरूक किसान भी होते हैं जो न केवल अपने खेती से आमदनी बढाते है, बल्कि अपने व्यक्तिगत प्रयासों के कारण आस पास के अन्य कृषको को लाभ पहुचने में भी अपना योगदान देते हैं। इंदौर जिले के ऐसे ही एक कृषक की सफलता की कहानी हैं इन्होंने सोयाबीन में अधिक उत्पादन लेने के साथ–साथ अपने खेत में तालाब बनाकर मछली पालन, एजोला, वर्मीकम्पोस्ट, उद्यानिकी आदि का अपने गाँव में प्रवेश कर अन्य सभी किसानो के लिए प्रेरणास्त्रोत बने हैं।

सलाहकार संस्थान

कृषि महाविद्यालय इंदौर

कृषि विभाग, जिला इंदौर

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

समस्या

- घटता हुआ जलस्तर
- भूमि की उर्वरता में कमी
- जलवायु परिवर्तन से उत्पादन में कमी

निवारण

युवावस्था में ही श्री लक्ष्मनसिंह मंडलोई जी ने इंदौर शहर से सटे ग्राम निग्नोती में अपने पुश्तैनी व्यवसाय खेती को अपनाया। अपने बड़े भाई जो की एक प्रगतिशील कृषक भी हैं, इनके मार्गदर्शन में श्री लक्ष्मनसिंह जी ने अपनी 18 हेक्टेयर खेती में सोयाबीन, अरहर, मक्का, गेहू, चना, लहसुन एवं प्याज जैसी फसलों के साथ साथ नए–नए प्रयोग करने की भी शुरुवात की। ये हमेशा कृषि महाविद्यालय, इंदौर के वैज्ञानिक तथा कृषि विभाग के ग्रामीण विस्तार अधिकारी से चर्चा करते रहते थे। विगत कुछ वर्षो में लगातार आ रही सूखे की स्थिति, अनियमित एवं असामयिक वर्षा, से होने वाले नुकसान से बचने के लिए नई तकनिकीयों का प्रयोग

किया ।

श्री लक्ष्मनसिंह जी ने अपने खेत से खरीफ 2016 के दौरान सोयाबीन प्रजाति जे एस 20–34 तथा जे एस 95–60 प्रजातियों का 30 क्विंटल/हेक्टेयर के हिसाब से उत्पादकता प्राप्त की। इनके अनुसार सोयाबीन की फसल में बोवनी का समय बहुत ही महत्वपूर्ण होता हैं। वर्षा के आगमन से पहले ही ये अपने खेत में प्रत्येक वर्ष गोबर की सड़ी हुए खाद डालकर खेत को तैयार करते हैं। श्री लक्ष्मनसिंह अपने आपको एक जागरूक किसान मानते हैं तथा कृषि के सभी कार्य समय पर करते हैं। इनके अनुसार कीटों एवं बीमारियों का प्रकोप जानने एवं इनके नियंत्रण हेतु खेत की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। साथ ही लम्बी अवधि तक सुखे की स्थिति में ये सोयाबीन की फसल में सही समय पर सिंचाई करते हैं। श्री लक्ष्मणसिंह जी ने पानी का गिरता हुआ जलस्तर देखते हुए कृषि महाविद्यालय, इंदौर के वैज्ञानिकों की सलाह एवं मध्य प्रदेश शासन की बलराम तालाब परियोजना के अंतर्गत अपने 1 हेक्टेयर खेत में तालाब बनाया हैं जिसके कारण इनके पुरे परिसर में जलस्तर बढ़ गया तथा अन्य कृषको को भी लाभ मिल रहा है। साथ ही फसल के दौरान खरपतवार प्रबंधन के लिए ये खरपतवारनाशकों के स्थान पर आज भी निंदाई गुड़ाई को महत्व देते हैं। इसके लिए ये ट्रेक्टर चालित डोरे का प्रयोग कर अपने सोयाबीन के खेत को खरपतवार मुक्त रखते हैं। विगत 5 वर्षो के दौरान किसी भी वर्ष इनके सोयाबीन का उत्पादन 30 क्विंटल/हेक्टेयर से कम नहीं होने का श्रेय ये समय पर प्रबंधन एवं उन्नत उत्पादन तकनिकी का प्रयोग तथा कृषि विभाग के अधिकारी तथा वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन को देते हैं ।

12 श्री परसराम चौधरी – प्रवर्तक या प्रोत्साहक

नाम	: श्री परसराम चौधरी
पता	: मालंदि, महु, इंदौर (म.प्र.)
आयु	: 37 वर्ष
शिक्षा	: बाहरवीं
कुल जमीन	: 1.6 हे.
सोयाबीन के अधीन जमीन	: 1.6 हे.
उगाई जा रही फसलें	: सोयाबीन, आलू , गेहूँ
संपर्क नं.	: 7828184047

परिचय

त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है किसान। वह जीवन भर मिट्टी से सोना उत्पन्न करने हेतु सदैव नवीन तकनीकियों की खोज में जुटा रहता है । तपती धूप, कड़ाके की ठंड तथा मूसलाधार बारिश भी उसकी इस साधना को तोड़ नहीं पाते । हमारे देश की लगभग साठ प्रतिशत आबादी आज भी गांवों में निवास करती है । जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है ।

सलाहकार संस्थाएँ

आई.टी.सी. "मिशन सुनहेरा कल

नेशनल सेंटर फॉर ह्यूमन सेटलमेंट्स एंड एनवायरनमेंट (एन.सी.एच.एस.ई.)

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

समस्या

- अधिक लागत एवं कम उत्पादन
- भूमि की उर्वरता में कमी
- जलवायु परिवर्तन से मौसम में अनिश्चितता

निवारण

खरीफ के दौरान श्री परसराम चौधरी सोयाबीन की फसल परंपरागत तकनीकों से लेते थे। बीज ड्रिल के माध्यम से बुवाई, मिट्टी का परीक्षण, बीज बोने से पहले उपचार और अंकुरण परीक्षण का इन्हें कोई ज्ञान नहीं था। वह बीजों को अवैज्ञानिक तरीके से खेत में बोते थे, फलस्वरूप प्रति एकड़ अधिक बीज की लागत होती थी। गत वर्षों में खरीफ में जलवायु अनिश्चितता के चलते सोयाबीन उत्पादकता में भारी गिरावट हो रही है। श्री परसराम चौधरी जैसे अनेकों किसानों के लिए सोयाबीन बोना फायदेमंद नहीं रहा। ऐसे में किसानों की समस्याओं को समझकर आई.टी.सी. के "मिशन सुनहेरा कल" तथा कार्यान्वयन एन.सी.एच.एस.ई. के फील्ड यूनिट के सदस्यों ने सोयाबीन के उत्पादन में सुधार के लिए कुछ उपाय सुझाए, जो जलवायु से उत्पन्न होने वाले जोखिम को कम कर सकते हैं। भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर द्वारा विकसित ब्रॉड

बेड फरो (बीबीएफ) मशीन से सोयाबीन की बुवाई करना इस समस्या का एक समाधान था। दूसरा सुझाव मृदा की उर्वरता को जानने के लिए मिट्टी का परीक्षण करना था, ताकि उचित संतुलित पोषकतत्व प्रबंधन किया जा सके। बेहतर उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए बीज बोने से पहले बीज का उपचार आवश्यक है जिससे उत्पादन में वृद्धि होगी तथा किसानों के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। पहले वर्ष में श्री परसराम ने इन नई तकनीकों को 1 एकड़ में अपनाया तथा अधिक उत्पादकता पा कर इन्होंने अपनी सारी जमीन पर इन तकनीकों को अपनाने का फैसला किया। अब यह बीबीएफ मशीन के साथ अपने पूरे खेत में फसल उगाते हैं। बीबीएफ मशीन का उपयोग जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले जोखिम को कम करता है, अत्यधिक बरसात होने पर खेत में भरे पानी को यह तकनीक पानी का निकास करने में सहायता करती है और कम वर्षा में मृदा में उचित नमी बनाये रखती है। यह सोयाबीन की खेती करने के लिए एक अच्छी वैज्ञानिक पद्धति है जिससे इन्होने 26 कि./हे उत्पादन प्राप्त किया ।

13 फार्म फील्ड स्कूल–प्रदर्शन का अद्भुद तरीका

नाम	:	श्री रामचंद्र प्रजापति
पता	:	कुलस खर्ड, सिहोर (म.प्र.)
आयु	:	32 वर्ष
शिक्षा	:	बी.ए.
कुल जमीन	:	7.2 हे.
सोयाबीन के अधीन जमीन	:	1.2 हे.
उगाई जा रही फसलें	:	सोयाबीन, गेहूं, मूंग, मक्का, चना, अरहर, प्याज, लहसुन
संपर्क नं.	:	9977983614

परिचय

एक कहावत है कि भारत की आत्मा किसान है, जो गांवों में निवास करते हैं । किसान की कृषि ही शक्ति है और यही उसकी भक्ति है। वह देशभर के लिए अन्न, फल, साग, सब्जी आदि पैदा करते हैं, लेकिन बदले में उसे उसका उचित पारिश्रमिक तक भी नहीं मिल पा रहा है। यही कारण है की देश में सरकारी संस्थाओं के अतिरिक्त अन्य संस्थान भी इनके उदार के लिए कार्य कर रहे हैं ।

सलाहकार संस्थाएँ

अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना – कृषि अनुसन्धान केंद्र, (उम्मेदगंज) कोटा

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर

समस्या

- सोयाबीन की उत्पादकता में कमी
- साथी किसानों में नई तकनीकों का समय पर प्रचार–प्रसार का आभाव

निवारण

श्री रामचंद्र प्रजापति, एक प्रगतिशील किसान हैं। जब किसी भी तकनीक का पहली बार प्रचार–प्रसार किया जाता है, तो उसे प्रतिरोध और अविश्वास का सामना करना पड़ता है। "किसान फील्ड स्कूल" एक ऐसी विधि है जिसमें किसानों को शुरुआत से ही प्रदर्शित नई तकनीकों से जोड़ा जाता है। किसानों के समूह, नियमित रूप से प्रदर्शित नई तकनीकों के प्लॉट्स का भ्रमण करते हैं तथा ये फसल की अवधि के दौरान ही फसल में आने वाली समस्याओं पर प्रौद्योगिकी के लाभ को देखते हैं। श्री रामचंद्र प्रजापति, फील्ड स्कूल के प्रधान किसान हैं जो की अन्य किसान भाइयों के साथ अपने खेत में नई तकनीकों के अनुभव को साँझा करते हैं। इन्होने ब्रॉड बेड तथा फरो द्वारा बोवाई को प्रदर्शित कर इस तकनीक से 29 कि./हे. उत्पादन पा के अन्य किसान बंधुओ को भी इसकी और आकर्षित किया।

प्रदर्शन फसल
सोयाबीन